अध्याय 20

परमेश्वर के प्रतिज्ञा की परिरक्षण

अध्याय 20 में अब्राहम और सारा को एक बार फिर हम भ्रमण करते हुए पाते हैं। गरार की घटना, अध्याय 12 में मिस्र में घटित घटना के समतुल्य दिखाई देता है।

अब्राहम का धोखा और अबीमेलेक का भोलापन (20:1-7)

[1]फिर अब्राहम वहाँ से निकल कर दक्खिन देश में आकर कादेश और शूर के बीच में ठहरा, और गरार में रहने लगा। [2]और अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा के विषय में कहा, "वह मेरी बहिन है," इसलिये गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजकर सारा को बुलवा लिया। [3]रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर कहा, "सुन, जिस स्त्री को तू ने रख लिया है उसके कारण तू मर जाएगा क्योंकि वह सुहागिन है।" [4]परन्तु अबीमेलेक उस के पास न गया था; इसलिये उसने कहा, "हे प्रभु, क्या तू निर्दोष जाति का भी घात करेगा? [5]क्या उसी ने स्वयं मुझ से नहीं कहा, 'वह मेरी बहिन है?' और उस स्त्री ने भी आप कहा, 'वह मेरा भाई है,' मैं ने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से यह काम किया।" [6]परमेश्वर ने उससे स्वप्न में कहा, "हाँ, मैं भी जानता हूँ कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है, और मैं ने तुझे रोक भी रखा कि तू मेरे विरुद्ध पाप न करे; इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने नहीं दिया। [7]इसलिये अब उस पुरुष की पत्नी को उसे लौटा दे; क्योंकि वह नबी है, और तेरे लिये प्रार्थना करेगा, और तू जीता रहेगा; पर यदि तू उसको न लौटाए तो जान रख कि तू और तेरे जितने लोग हैं, सब निश्चय मर जाएँगे।"

आयत 1. यह **अध्याय अब्राहम की अगली यात्रा की प्रारंभ की घटना से प्रारंभ होता है।** यह शब्दांश कि "वहाँ से" को ऐसा समझा जा सकता है कि यह वह स्थान है जहाँ से अब्राहम ने घाटी में से उठते हुए धुआँ को देखा होगा, जहाँ एक समय लूत रहता था (19:27, 28)। क्योंकि अब्राहम की यात्रा में उसका संपूर्ण घराना सम्मिलित था तो यह शब्दांश कि "वहाँ से" संभवतः उस स्थान की ओर इशारा करता है जहाँ उसने मेम्रे के बाँझों के बीच उसने अपने घराने लिए तंबू गाड़ा था (18:1)।

पाठ यह नहीं बताता है कि कुलपति दक्षिण कनान के **नेगेव** क्यों गया। परंतु यह कहता है कि वह **कादेश और शूर के मध्य** जो मिस्र के पूर्व की ओर स्थित था, **बस गया**। यह वही स्थान है जहाँ पहले हाजिरा भागी थी (देखें टिप्पणी 16:7, 14)। अब्राहम वहाँ कब तक ठहरा रहा, ज्ञात नहीं है परंतु वहाँ से वह अजनबी की भाँति उत्तर की ओर **यात्रा करके** גּוּר *(गूर)* **गरार** पहुँचा। गरार की भौगोलिक अवस्थिति भी ज्ञात नहीं है; लेकिन सबसे संभावित क्षेत्र तेल हारोर है, जो गाज़ा से दक्षिण पूर्व दिशा में नौ मील की दूरी पर तथा बीरशेबा से उत्तर पश्चिम दिशा में पंद्रह मील की दिशा पर स्थित है।[1]

आयत 2. गरार का राजा अबीमेलेक है जिसका शाब्दिक अर्थ "मेरा पिता राजा है।" व्यक्तिगत नाम के बजाय ऐसा लगता है कि अबीमेलेक,मिस्र की "फिरौन" या रोम की "कैसर" की भाँति एक उपाधि है।[2] उत्पत्ति 26:1 एक और राजा के विषय में बताता है जो "अबीमेलेक" कहलाता था।

यहाँ **अब्राहम** ने दूसरी बार **अपनी पत्नी सारा** के बारे में यह कह कर झूठ बोला कि **वह उसकी बहिन है** (देखें 12:19)। पूर्ववर्ती घटना के विपरीत (देखें 12:11), कुलपति ने उसकी खूबसूरती के विषय उसकी प्रशंसा नहीं की। अब पच्चीस वर्ष और बीत चुके थे और अब सारा लगभग नब्बे वर्ष की हो गई थी। इन सभी विवरणों को कैसे समझा सकता है?

उन दिनों जीवनकाल बहुत लंबा होता था तो सारा लगभग मध्यम उम्र की रही होगी और अभी भी बहुत आकर्षक थी। उसकी सुंदरता का आकलन अब्राहम के इन शब्दों से किया जा सकता है, "मैं ने यह सोचा था, कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे" (20:11)। इसका समतुल्य मिस्र की घटना को सारा की सुंदरता के भय से संबंधित किया गया है (12:11, 12)। यह सोचते हुए कि पाठक इस घटना को पूर्ववर्ती घटना से संबंधित करके देखेंगे तो हो सकता है कि लेखक ने गरार की कहानी का विस्तृत विवरण देने की आवश्यकता नहीं समझी होगी।

इसका दूसरा विश्लेषण यह हो सकता है कि अबीमेलेक ने **सारा को** उसकी सुंदरता के कारण नहीं बल्कि आर्थिक या सेना के कारण अपने कब्ज़े में लिया होगा। क्योंकि उत्पत्ति 13:2 के अनुसार अब्राहम बहुत अमीर था। और उसकी 318 सिपाही वाली अपनी सेना भी थी (14:14)। अब तक उसके पास ढेर सारी भेड़ बकरियाँ और योद्धा भी हो गए होंगे। वह बहुत प्रभावशाली हो गया होगा और गरार का पलिस्तीनी राजा, कुलपति की सहायता की अपेक्षा कर रहा होगा। हाँ इस विश्लेषण में कुछ दम तो है किंतु अब्राहम का 20:11 का डर कि "मेरी पत्नी के कारण ये लोग मेरा घात करेंगे" से ज़्यादा मेल नहीं खाता है।

आयत 3. रात को परमेश्वर अबीमेलेक के स्वप्न में आया। यह एक और अदभुत अनुच्छेद है क्योंकि मेल्कीसेदेक (14:18-20), बालाम (गिनती 22-24) और फिरौन को (2 इतिहास 35:22)[3] के भाँति यह अनुच्छेद यह बताता है कि अब्राहम और उसके संतानों ने पुराने नियम में परमेश्वर के प्रकाशन का एकल

अधिकार अपने तक ही सीमित नहीं रखा। वृतांत यह भी नहीं बताता है कि परमेश्वर ने जब अपने आपको राजाओं पर प्रकट किया तो कितना समय बीत गया होगा। 20:17, 18 में यह लिखा है कि परमेश्वर ने अबीमेलेक के घराने के सभी स्त्रियों की कोख बंद कर रखी है जिसके कारण किसी का भी गर्भाधान नहीं हो पा रहा था। यह विवरण यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि अबीमेलेक का सारा को लेना और परमेश्वर का उसके स्वप्न में आने में कई महीने बीत गए होंगे। सभी महिलाओं को इस बात को मालूम करने में कुछ समय लगा होगा कि वे अब गर्भाधारण नहीं कर सकतीं हैं।

परमेश्वर ने भयानक वक्तव्य के द्वारा राजा को चेतावनी दीः "**सुन, जिस स्त्री को तू ने रख लिया है, उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि वह सुहागिन है।**" प्राचीन संसार में व्यभिचार के बदले मृत्युदण्ड का प्रावधान था और इस प्रकार के दण्ड को बाद में मूसा की व्यवस्था में भी सम्मिलित कर लिया गया था (लैव्य. 20:10; व्यव. 22:22)। इसके साथ ही, यह उत्पत्ति 12:17 की घटना भी स्मरण दिलाता है जब फिरौन ने सारा को अपने रानीवास में रख लिया था और तब फिरौन के परिवार में कैसी विपत्ति आई थी। फिरौन तथा अबीमेलेक, दोनों ने ईश्वरीय श्राप का सामना किया (देखें 12:3)। दोनों ही व्यक्तियों ने अब्राहम की पत्नी को लेकर उसके (अब्राहम) साथ गलत संबंध स्थापित किया।

आयत 4. अबीमेलेक ने यह कहकर अपना पक्ष रखा कि वह अब तक **उसके निकट नहीं गया है**। इब्रानी शब्द קָרַב *(कारब)* का अर्थ "हुँच" या "निकट आना" है; लेकिन इस प्रकार के संदर्भ में इसका अर्थ यौन संबंध स्थापित करना है (लैव्य. 18:6, 14, 19; व्यव. 22:14; यशा. 8:3), जिसे राजा ने सारा के साथ ऐसा करने से सिरे से नकार दिया था।

तब राजा ने **प्रभु**[4] से पूछा कि **क्या वह निर्दोष जाति** [राष्ट्र] **का नाश करेगा**। यहाँ अबीमेलेक ने राष्ट्र का संदर्भ दिया क्योंकि प्राचीनकाल के लोगों का मानना था कि यदि राजा पर ईश्वरीय दण्ड आता था तो सम्पूर्ण राष्ट्र के लोगों को भी इसका सामना करना पड़ता था। क्योंकि परमेश्वर का श्राप राजा के पत्नी और उसके घराने के अन्य महिलाओं पर पहले ही आ चुका था (20:17, 18) तो अबीमेलेक को डर था कि कहीं प्रभु उसके राज्य के सभी लोगों को नाश न कर दे। उसका निवेदन यह था कि वह और उसके राज्य के लोग इस मामले में निर्दोष हैं और इसके लिए उन्हें नाश नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उनमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि सारा एक विवाहित स्त्री है।

आयत 5. राजा ने अब्राहम के शब्दों कि **"वह मेरी बहिन है"** (20:2) और सारा का दावा कि "**वह मेरा भाई है**" (देखें 12:13) का सहारा लेकर अपना पक्ष दृढ़ किया। उसका मानना था कि इस मामले में परमेश्वर उसके **मन की खराई और** उसके **व्यवहार की सच्चाई** का आदर करे। खराई, תֹּם *(थोम)* का अर्थ यह है कि राजा पूर्णतया "सिद्ध" या अपने हृदय में "निर्दोष" है (देखें 6:9) और उसका चाल चलन में किसी भी प्रकार का खोट नहीं है। "मन की खराई और व्यवहार

की सच्चाई" पवित्र/निर्दोष हाथों की ओर संकेत करता है (भजन 24:4; 26:6; 73:13) जिसका अर्थ "पाप रहित व्यवहार" भी हो सकता है। अबीमेलेक यह दावा कर रहा था कि वह सारा के प्रति अपने विचारों तथा चाल चलन में निर्दोष है।

आयत 6. परमेश्वर ने अबीमेलेक **से स्वप्न में बात की** कि जब उसने सारा को अपने रानीवास में रखा तो वह राजा **के हृदय की खराई** से भली भाँति अवगत था। केवल यही नहीं बल्कि प्रभु ने यह भी कहा कि **"मैंने तुझे रोक भी रखा है कि तू मेरे विरूद्ध पाप न करे।"** यह वक्तव्य व्यभिचार के गंभीरता को दर्शाता है। इस प्रकार का पाप सारा और अब्राहम के विरूद्ध ही नहीं है बल्कि यह आधारभूत रूप से परमेश्वर के विरूद्ध पाप है जो वैवाहिक संबंध का आधार है (2:18-25)। इसका तात्पर्य यह भी है कि परमेश्वर ने सारा के प्रति अबीमेलेक के लैगिंक इच्छा को नियंत्रण में रखा जिससे कि उसने उसे **छूने नहीं दिया** (यौन संबंध के लिए) और मृत्युदण्ड के योग्य पाप नहीं करने दिया।

आयत 7. अब परमेश्वर ने अबीमेलेक को उनके समस्या का ठीक कारण बता दिया जो उसने और उसके लोगों ने सारा, जो दूसरे व्यक्ति की पत्नी है, के कारण सहा और परमेश्वर ने यही इच्छा जताई कि राजा इस सूचना पर कार्यवाही करे। एक अन्य जातिय शासक यह तर्क दे सकता था कि उसको सारा को अपनी पत्नी बनाकर रखने का पूरा अधिकार है क्योंकि अब्राहम ने उससे झूठ बोला था। ऐसी घटना होने से बचाने के लिए परमेश्वर ने अबीमेलेक को सारा को उसके पति को लौटाने को यह कहकर कहा, **"क्योंकि वह भविष्यवक्ता है, और तेरे लिये प्रार्थना करेगा, और तू जीता रहेगा।"**

वचन में यह पहला अवसर है जब "भविष्यवक्ता" शब्द का प्रयोग किया गया है। यहाँ इस शब्द का तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो दूसरों के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना करता है। बाद के भविष्यवक्ताओं - मूसा, शमूएल, यिर्मयाह, आमोस और अन्य ने इस्राएलियों के लिए प्रार्थना की। जबकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को लोगों को प्रासंगिक संदेश देने के लिए, धर्मी जीवन जीने के लिए दिशा निर्देश, जब वे असफल होते हैं तो उनके पापों के प्रति उन्हें दोषी ठहराना, यदि उन्होंने बलवा किया तो उसके कारण आने वाले न्याय के प्रति चेतावनी देना और यदि उन्होंने पश्चाताप किया और परमेश्वर की ओर लौट आए तो उन्हें भविष्य की आशा दिलाना है। अब्राहम पहले ही सदोम के प्रति मध्यस्थता कर चुका था (देखें 18:23-33) और अब परमेश्वर ने अबीमेलेक को प्रतिज्ञा दी कि वह वैसे ही भविष्यवक्ता की भूमिका निभाएंगे ताकि वह और उसके लोग जीवित रह सकें। इस पर ज़ोर देते हुए परमेश्वर ने यह भी जोड़ा कि यदि राजा, सारा को **नहीं लौटाएंगे** तो वह और उसके **सारे लोग निश्चय मारे जाएंगे।**

अबीमेलेक का अब्राहम के साथ समझौता (20:8-18)

8बिहान को अबीमेलेक ने तड़के उठ कर अपने सब कर्मचारियों को बुलवा

कर ये सब बातें सुनाई और वे लोग बहुत डर गए। 9तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलवा कर कहा, तू ने हम से यह क्या किया है? और मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा था, कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है? तू ने मुझ से वह काम किया है जो उचित न था। 10फिर अबीमेलेक ने अब्राहम से पूछा, तू ने क्या समझ कर ऐसा काम किया? 11अब्राहम ने कहा, मैं ने यह सोचा था, कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे। 12और फिर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर वह मेरी पत्नी हो गई। 13और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़ कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैं ने उससे कहा, इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी: कि हम दोनों जहां जहां जाएं वहां वहां तू मेरे विषय में कहना, कि यह मेरा भाई है। 14तब अबीमेलेक ने भेड़ - बकरी, गाय - बैल, और दास - दासियां ले कर अब्राहम को दीं, और उसकी पत्नी सारा को भी उसे फेर दिया। 15और अबीमेलेक ने कहा, देख, मेरा देश तेरे सामने है; जहां तुझे भावे वहां रह। 16और सारा से उसने कहा, देख, मैं ने तेरे भाई को रूपे के एक हज़ार टुकड़े दिए हैं: देख, तेरे सारे संगियों के सामने वही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा, और सभों के सामने तू ठीक होगी। 17तब अब्राहम ने यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने अबीमेलेक, और उसकी पत्नी, और दासियों को चंगा किया और वे जनने लगीं। 18क्योंकि यहोवा ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था।

आयत 8. परमेश्वर से कठोर चेतावनी पाकर **अबीमेलेक** ने समय बर्बाद नहीं किया। **भोर को जल्दी उठकर उसने अपने सभी सेवकों को बुलाया** और प्रभु की चेतावनी को उनसे भी संबंधित किया। यह सुनकर वे लोग **अत्यंत डर गए**। इस घटना ने इतना भयभीत किया कि सेवकों ने अब्राहम को अपने स्वामी के सम्मुख उपस्थित होने के लिए कहा।

आयत 9. अबीमेलेक ने कई प्रश्न कुलपति से पूछे कि **"तू ने हमारे साथ यह क्या किया है?"** यह प्रथम प्रश्न अलंकारिक प्रश्न था क्योंकि राजा के राजदरबार में अब्राहम के धोखे के बारे में सभी जानते थे और इस कारण उनके सिर पर मृत्यु दण्ड मंडरा रहा था। मिस्र के फिरौन ने भी, इसी प्रकार की परिस्थिति में, सारा के भाई से ऐसे ही प्रश्न पूछे थे। (12:18)।

अब्राहम को प्रश्न का उत्तर के लिए समय पर्याप्त दिए बिना, राजा ने प्रश्न पूछना जारी रखा, **"मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है?"** पाप के लिए חַטָּאָה *(हाटाह)* शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "दोष" या "अपराध" है, क्योंकि मध्य पूर्व के शास्त्रों में व्यभिचार के पाप को बहुत बड़े अपराध का दोष माना गया है।[5] दूसरे शब्दों में अबीमेलेक पूछ रहा था, "मैंने तेरे विरूद्ध कौन सा पाप किया है कि तूने इतने बड़े पाप का दण्ड मेरे और मेरे लोगों पर डाल दिया है?"

एक बार फिर से अब्राहम को उत्तर देने का समय नहीं दिया गया क्योंकि मूलरूप से पाप उसी का ही था। यह तो उसके झूठ के बाद ही अबीमेलेक ने सारा को अपने रानीवास में रखा था। इसीलिए राजा ने डांट जारी रखी: **"तूने मुझसे वह काम कराया है जो उचित न था।"** हाँ, यह तो सत्य है। न तो अबीमेलेक और न ही उसके लोगों की प्रवृति मिस्रियों के समान थी जब अब्राहम और सारा ने फिरौन को धोखा दिया था। इस राजा ने तो परदेशियों के साथ कोमलता से व्यवहार किया था और उसने उन्हें अपने देश में रहने की अनुमति दी जबकि अब्राहम की बड़ी संपत्ति, पशुधन भी था जो स्थानीय लोगों के लिए भोजन और पानी की समस्या खड़ी कर सकता था। राजा ने परदेशी से यही अपेक्षा की थी कि वह उसके प्रति दयालु हो और उसके और उसके राज्य को दया दिखाये।

आयत 10. क्रोध में राजा ने यह मांग की कि **अब्राहम** उसके प्रश्नों का उत्तर दे: **"तूने यह क्या किया है कि तूने इसका बोझ मुझ पर लाद दिया?"** इस प्रश्न में इब्रानी शब्द רָאָה *(राह)* का अंग्रेजी अनुवाद "का सामना करना पड़ा" अधिक उचित नहीं है। (हिंदी में इस शब्द का अनुवाद ठीक नहीं किया गया है।) KJV में इसका शाब्दिक अनुवाद पाया जाता है: "तू क्या देखता है?" जिसका अभी भी कुछ और विश्लेषण की आवश्यकता है। NRSV में इस पाठ का निकटतम अनुवाद पाया जाता "तू क्या सोचता था ...?" जॉन टी. विलिस ने इस प्रश्न के द्वारा इस शब्द का शाब्दिक अनुवाद एवं सामान्य अनुवाद में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है "तूने क्या देखा?" दूसरे शब्दों में अबीमेलेक यह पूछ रहा था "तूने क्या घटना घटित होने की अपेक्षा की कि तूने झूठ बोला?"[6] यह पूरी घटना अबीमेलेक के लिए उसके घरवालों तथा सेवकों के मध्य बड़ा ही अपमानजनक था। सामान्य स्थिति में अब्राहम को संभवतः अपने हाथ से जीवन धोना पड़ता था। परमेश्वर के चेतावनी के कारण राजा, कुलपति को दण्ड देने से डरता था, लेकिन वह अब्राहम से अपने प्रश्नों का उत्तर पाए बिना क्षमा करने के लिए तैयार नहीं था। अंततः राजा ने दोषी को बोलने की अनुमति दी।

आयत 11. जैसे ही **अब्राहम** ने अपना पक्ष रखना प्रारंभ किया तो उसने अपने आपको दोषी ठहराया। सर्वप्रथम उसने यह स्वीकार किया कि उसने अबीमेलेक तथा उसके लोगों के व्यवहार का पूर्वानुमान लगाया था, **"इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे"** (12:11, 12; 20:2 की टिप्पणी देखें)। उसने गलत पूर्वानुमान लगाया कि उस स्थान के लोग दूसरे मनुष्यों के प्रति कोई इज़्ज़त नहीं है या फिर उनके अंदर प्राथमिक नैतिकता भी नहीं है। कुलपति के कनान का अनुभव ने संभवतः उसके अंदर भय कम किया होगा क्योंकि वह वहाँ लगभग पच्चीस वर्ष तक रहा और इससे पहले उसको इस तरह नहीं डराया गया था। इस कनान प्रवास के दौरान उसको केवल एक ही बार भय का सामना करना पड़ा था। पूर्व के चार राजाओं द्वारा आक्रमण। तब, परमेश्वर ने अमोरी भाइयों के सहायता से अब्राहम को उसकी निजी सेना के सहयोग से उन पर आसान विजय दे दी थी (14:13-16)।

जब इस दुःख भरी घटना को हम उत्पत्ति के वृतांत के संदर्भ में देखते हैं तो ऐसा लगता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने अब्राहम को मेसोपोटामिया से बुलाया और उसको असीमित भेड़ बकरियों, जानवर और धन इत्यादि देकर आशीषित किया था। इसके अलावा उसके पास सैकड़ों लड़ाकू सिपाही थे (14:14); वस्तुतः कनान में सर्वाधिक सेना उसके पास ही थी। तो फिर वह इतना भयभीत क्यों था? क्या उसने यहोवा के इन वचनों पर विश्वास नहीं किया, "मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं" (15:1)? क्या उसने परमेश्वर के उस प्रतिज्ञा के प्रति जो हाल ही में उसके साथ की गई थी, पर विश्वास नहीं किया कि एक वर्ष के भीतर ही उसको सारा के द्वारा एक बालक पैदा होगा और वह राजाओं और जातियों की जननी होगी (17:16, 17; 18:10-14)? निश्चय ही यह अब्राहम के जीवन का सबसे दुःखभरा समय रहा होगा। सारा को अबीमेलेक के पत्नी होने के लिए देने के द्वारा वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि एक बच्चा उसके देह से उसके लिए पैदा होगा, को खतरे में डाल रहा था।

आयत 12. अब्राहम का दूसरा तर्क बुद्धिसंगत व्याख्या और धोखा का दयनीय उदाहरण है। उसने बड़ी चतुराई से कहा कि उसने सारा के बारे में झूठ नहीं बोला है, **"और फिर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर वह मेरी पत्नी हो गई।"** यह तो अर्ध सत्य है क्योंकि उसने इसका आधा भाग कि वह उसकी **पत्नी** है, को छोड़ दिया। चूँकि कुलपति का वक्तव्य अधूरा सत्य है और उसका प्रयोग उसने राजा को धोखा देने के लिए किया, तो यह तो कोरा झूठ था।

आयत 13. अब्राहम का बचाव का आखिरी पक्ष भी कमज़ोर था। उसने यह कहा कि जो झूठ उसने राजा को बोला था वह उनका दैनिक जीवन का हिस्सा है। कुलपति ने सारा को निर्देश दिया था, **"और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़ कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैं ने उससे कहा, इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी: कि हम दोनों जहाँ जहाँ जाएं वहाँ वहाँ तू मेरे विषय में कहना, कि यह मेरा भाई है।"** इस अनुच्छेद में कृपा के लिए חֶסֶד *(हेसेद)* शब्द का प्रयोग किया गया है सामान्य तौर पर जिसका अर्थ "अटूट प्रेम" (NRSV), "करूणा" (NASB) या केवल "प्रेम" (NIV) है। आखिरी वाला अर्थ अब्राहम के मन में रहा होगा जब उसने सारा से कहा, **"इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी: कि हम दोनों जहाँ जहाँ जाएं वहाँ वहाँ तू मेरे विषय में कहना, कि यह मेरा भाई है।"** उनके इस प्रकार का लिखित झूठ मिस्र के फिरौन के दरबार में पाया जाता है (12:10-20), लेकिन अब्राहम का वक्तव्य यह दर्शाता है कि कई और अन्य अवसर रहे होंगे जब उन्होंने ऐसे छल का प्रयोग किया होगा। फिर भी, क्योंकि कथावाचक ने केवल दो घटनाओं का वर्णन किया है तो और ऐसी अन्य घटनाएं का ज़िक्र केवल कल्पना मात्र ही हो सकता है।

आयत 14. अब्राहम और सारा का अपने संबंध के बारे में फिरौन के सम्मुख प्रथम झूठ बोलने के समय, इससे पहले कि उनका झूठ पकड़ा जाता, कुलपति ने

राजा से कई बहुमूल्य उपहार प्राप्त किए थे (12:16)। इस अवसर पर, जब **अबीमेलेक** को यह पता चला कि सारा ही कुलपति की पत्नी है तो उसने बहुमूल्य उपहार **जैसे भेड़ और बैल और दास और दासियां अब्राहम को दिए**। प्राचीन मध्य पूर्व के कानून के अनुसार, ऐसा जान पड़ता है कि फिरौन के उपहार में दुल्हन का मूल्य भी शामिल था जो आमतौर पर दुल्हन के पिता या उनके देहान्त होने की स्थिति में उसके भाई को दिया जाता था। गरार के राजा का उपहार दुःखी पति अब्राहम को, उसके भरपाई के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि अबीमेलेक ने सारा को अज्ञानतावश अपने रानीवास में रख लिया था। **तब राजा ने सारा को उसे फेर दिया**।

आयत 15. अबीमेलेक की उदारता, अब्राहम को कहे इस वक्तव्य से पता चलता है: **"देख, मेरा देश तेरे सामने है; जहाँ तुझे भावे वहाँ रह।"** यह तथ्य कि इस अन्य जातिय राजा, जिसको धोखा दिया गया, सताया गया और उसके यहाँ आए परदेशी के द्वारा लज्जित किया गया, ने अब्राहम को अपने भ्रमण के दौरान कहीं भी, जहाँ उसको भावे, रहने की अनुमति देना, आश्चर्यचकित करने वाला है। उसका प्रत्युत्तर मिस्र के फिरौन का, अब्राहम और सारा के साथ व्यवहार के ठीक विपरीत है जिसने अपने लोगों को उन्हें (अब्राहम और सारा) मिस्र से शीघ्र से शीघ्र बाहर भेजने के लिए कहा (12:20)। अब्राहम के प्रति इस प्रकार का सम्मानित व्यवहार का कारण यह था कि राजा को अपनी और उसके प्रजा की शारीरिक चंगाई पता चल गया था जो अब्राहम के प्रार्थना और शुभकामनाओं पर आधारित था।

आयत 16. अबीमेलेक तब **सारा** की ओर मुड़ा और कहा कि सभी जानवरों एवं दास तथा दासियों (20:14) के साथ उसने **उसके भाई को चाँदी के एक हजार टुकड़े**[7] भी दे दिए हैं। अबीमेलेक ने अब्राहम को सारा के "भाई" के रूप में संबोधित किया न कि उसका "पति।" इस विडंबना की संदर्भ को नहीं भूलना चाहिए। राजा अभी भी इस तथ्य से क्रोधित था कि अब्राहम और सारा ने उसको धोखा दिया। चाँदी के टुकड़े के बारे में उसने कहा, **"देख, तेरे सारे संगियों के सामने वही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा, और सभों के सामने तू ठीक होगी।"**

"ठीक होना" या "निर्दोष ठहरना" के लिए इब्रानी शब्द כְּסוּת עֵינַיִם *(केसुथ इयायिम)* प्रयोग किया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ "आँखों का पर्दा" है (KJV)। NIV में इसका प्रयोग "पाप को ढांपने" के लिए किया गया है जिसका आशय यह है कि जो अब्राहम के साथ थे या फिर जो यह सुनें कि राजा ने सारा को रानीवास में रखा था, के आँखों के सामने से ढक जाए। सबको यह मालूम हो जाए कि अबीमेलेक के मन में कुछ भी बुरा नहीं था क्योंकि वह तो यह नहीं जानता था कि सारा अब्राहम की पत्नी थी। जब वह राजा के महल में थी तो उसने उसे लैंगिक संबंध बनाने के लिए भी नहीं छुआ था। इसलिए इस कारण सारा को कोई भी तुच्छ/घृणित न समझे। इस दृष्टिकोण से वह पूरी तरह "निर्दोष" (NEB) थी और उस पर किसी भी प्रकार का दोष नहीं था।

आयतें 17, 18. यह अप्रिय कथांश, अबीमेलेक के द्वारा गलत को ठीक करने के लिए ठीक कदम उठाने के साथ समाप्त होता है। तब **अब्राहम ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा ने अबीमेलेक और उसकी पत्नी और दासियों को** बाँझपन की बीमारी से **चंगा किया और वे जनने लगीं**। जिस प्रकार "भाई" शब्द पिछले आयत में व्यंग्यात्मक रूप से प्रयोग किया गया है उसी प्रकार का दूसरा व्यंग्य का उदाहरण इस आयत में भी पाया जाता है। अब्राहम ने परमेश्वर से प्रार्थना की और एक बार फिर से अबीमेलेक के परिवार की महिलाएं बच्चे जनने लगीं। उनके बाँझपन का कारण यह था कि **यहोवा ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था।** एक अन्य जातिय राजा और उनके पत्नियों के संबंध में, अब्राहम का प्रार्थना इतना प्रभावशाली क्यों था जबकि उनके विवाह के कई वर्षों के बाद और उनके विश्वास की परीक्षा के उपरांत भी सारा का कोख बंद पड़ा था (16:2)?

अगले अध्याय में, उनके कई वर्षों की कुंठा बड़े आनंद में बदल गई। परमेश्वर ने सारा के कोख को भी खोला और वह गर्भवती हुई और अपने वृद्धावस्था में उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

अनुप्रयोग

झूठ बोलने का खतरा (अध्याय 20)

झूठ पाप है और लोग अक्सर इसको तर्क संगत बनाकर अपने जीवन का आवश्यक भाग बना लेते हैं। कई बार लोग झूठ यह समझकर बोलते हैं कि यह उनकी परिस्थिति की आवश्यकता है या फिर उनके अच्छे जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है। उसी तरह, वे असत्य को तर्क संगत बनाकर दूसरे या फिर पूरे समुदाय के भलाई के लिए प्रस्तुत करते हैं। क्योंकि झूठ को इसी प्रकार सत्यापित किया जाता है और मनुष्यों में झूठ की प्रवृति विकसित हो जाती है। अब्राहम और सारा ने अपने सच्चे रिश्ते, पति और पत्नी को बार बार झूठ बोलकर, इसे व्यवहारिक आदत बना लिया था। क्योंकि कुलपति ने 20:13 में अबीमेलेक से यह स्वीकार किया कि कई वर्षों पूर्व परमेश्वर की आज्ञा पाकर कि वह अपने पिता के घर मेसोपोटामिया से बाहर निकल जाए तो उसने सारा को यह निर्देशित किया कि "जहाँ कहीं हम जाएं, मेरे विषय में ऐसा कहना कि 'वह मेरा भाई है।'"

हाँ, यह सत्य है कि उत्पत्ति केवल दो ही ऐसी घटनाओं का उदाहरण देता है (12:11-13; 20:2), परंतु कई और ऐसी घटनाएं हो सकती हैं जिसको कथावाचक ने प्रथम घटना के चौबीस वर्ष के अंतराल में नहीं लिखा। अब्राहम ने स्पष्टतया इसको अपने संदर्भ में उचित ठहराया परंतु उसने सारा के उचित स्थिति के बारे में चिंता नहीं की। (कि इस झूठ से सारा का क्या होगा या फिर सारा पर क्या विपत्ति आ सकती है?) दोनों घटनाओं में अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए उसने इस झूठ को उचित ठहराया (12:12; 20:11), जिसमें

उसको कुछ होने की स्थिति में ज़िम्मेदारी का पूरा बोझ उसने अपने पत्नी के कंधे में डाल दिया था। इसके साथ ही, कुलपति ने यह नहीं सोचा कि उसका झूठ फिरौन, अबीमेलेक या उसके लोगों पर क्या दुष्प्रभाव डाल सकता है।

अब्राहम और सारा के झूठ में आधी सच्चाई पाई जाती है; फिर भी यह इतना विनाशक था जिस प्रकार कि उस झूठ में जिसमें कोई सच्चाई नहीं होती है। थोड़ा सत्य जिसमें झूठ मिला हो वह झूठ और भी अधिक स्वीकार्य और धोखे से भरा हुआ होता है। इसका उदाहरण निम्न कहानियों में देखा जा सकता है: शैतान का हव्वा (और आदम) को अदन की वाटिका में धोखा देना (2:17; 3:1-13); हाबिल की हत्या के बाद परमेश्वर को कैन का बेईमानी भरा उत्तर (4:8, 9); और हनन्याह और सफीरा का कलीसिया तथा परमेश्वर के समक्ष झूठ (प्रेरितों. 5:1-11)।

मनुष्य का हमेशा ही झूठ के प्रति झुकाव रहा है। यह दस आज्ञा (निर्गमन 20:16), पवित्रता के नियम (लैव्य. 19:11, 12), यीशु की शिक्षा (मत्ती 19:18) और आदि कलीसिया में निषेध किया गया था (इफि. 4:25; कुलु. 3:8, 9; याकूब 3:14)। इब्रानियों 12:1 के अनुसार झूठ बोलना पाप है जो हमें बड़ी आसानी से अपने जाल में फांस लेता है जैसे कि इसने अब्राहम के साथ किया। हमें इसको अपने व्यवहारिक जीवन का हिस्सा नहीं बनने देना चाहिए जैसे कि कुलपति ने स्वीकार किया कि उसने ऐसा किया (20:13)।

झूठ की जड़ विश्वास की कमी में पाई जाती है। अब्राहम, जो वचन में विश्वासियों का पिता कहलाता है (रोमियों 4:11, 16) ने बहुधा अपने विश्वास के साथ संघर्ष किया है। परमेश्वर ने उसे कई वर्षों तक कई प्रकार के आशीषों से आशीषित किया था उसके बाद भी उसने परमेश्वर पर भरोसा करते हुए "विश्वास से" आगे बढ़ने के बजाय "अपनी बुद्धि से" चलने का प्रयास किया (2 कुरिं. 5:7)।

परमेश्वर की सहायता से अब्राहम के लोगों ने पूर्व के चार राजाओं को हराया (14:14-20) तो निश्चय ही वे अबीमेलेक के आक्रमण से भी उसे बचा सकते थे। फिर भी इस पलिस्तीनी राजा और उसके सैनिकों के डर से उसने झूठ बोला, इसके बजाय कि वह सच्चे परमेश्वर, जो उसके विश्वास का ढाल है पर भरोसा रखता (15:1; इफि. 6:16)। उसने *एल सद्दाई* ("सर्वशक्तिमान परमेश्वर"; 17:1) को भुला दिया जिसने इतने वर्षों तक उसे आशीष दी थी।

मसीह के शिष्यों ने भी कुछ इसी का प्रकार अनुभव अपने जीवन में किया था। उनको उस पर इतना विश्वास था कि उन्होंने अपने पेशे छोड़े और इस्राएल देश में उसके साथ हो लिए। जब उन्होंने उसे चंगा करते हुए देखा तो उनका विश्वास बढ़ गया। फिर भी गलील की झील के तूफान में उन्होंने अपना विश्वास उस पर से हटा लिया। यीशु ने उन्हें उनके अल्प विश्वासी होने पर डांट लगाई (मरकुस 4:40)।

दूसरे अवसर पर प्रभु ने उनसे कहा कि यदि उनका विश्वास राई के दाने के बराबर भी होगा तो वे वास्तव में बड़े बड़े काम करेंगे (मत्ती 17:10)। उनका प्रभु पर भरोसा पिघल गया और टूट गया। और इसी तरह अब्राहम तथा अन्य परमेश्वर के लोगों के साथ भी हुआ और यह आज हमारे साथ भी ऐसा ही होता है। यहाँ तक कि एक विश्वासी के मन में, हमेशा अविश्वास का खतरा बना रहता है (मरकुस 9:24)।

वही झूठ जो फिरौन के घर मिस्र में महामारी लाया (12:17-19) उसी ने कुलपति को स्थानीय शासक के सामने झूठ के प्रति अपनी सफाई प्रस्तुत करने के लिए शर्मिंदा किया (20:9-13)। उसने अपना पाठ क्यों नहीं सीखा और परमेश्वर पर भरोसा क्यों नहीं किया, जो उसे प्रतिज्ञा के देश तक सुरक्षित लाया और उसकी देखभाल की, जबकि उसने उसकी आज्ञा नहीं मानी या अधूरे मन से उसके आज्ञा का पालन किया था।

झूठ अधिक पीड़ा देता है। अब्राहम को, जिनके संपर्क में वह आता था, उन सभी लोगों के लिए आशीष का कारण बनना था। दुर्भाग्यवश, वह अपने झूठ बोलने के कारण परेशानी का कारण बना। मिस्र में आशीष का कारण होने के बजाय सारा के प्रति झूठ बोलकर उसने फिरौन और उसके घराने पर महामारी लाया (12:17)। उसी तरह उसने गरार में झूठ बोलकर अबीमेलेक के घर पर दुःख और मृत्यु का भय लाया (20:3, 7, 17)। इस झूठ के द्वारा उसके घराने के सभी स्त्रियों के कोख को परमेश्वर ने बंद कर दिया (20:18)।

उसी तरह, दाऊद ने झूठ बोलकर हित्ती ऊरिय्याह को युद्ध के मैदान से घर बुलाकर, जिससे कि उसका बेतशेबा के साथ किए गए व्यभिचार को ढांपा जा सके, इस विश्वासयोग्य राजा के सेवक को अपनी जान गंवानी पड़ी (2 शमूएल 11:1-27)। इससे बढ़कर, व्यभिचार के पाप से जो बच्चा पैदा हुआ वह मर गया और दाऊद के घर से तलवार कभी नहीं हटी (2 शमूएल 12:10), जैसे हिज बच्चों ने बलात्कार, हत्या, गृहयुद्ध, और युद्ध में मृत्यु के रूप में एक-दूसरे और उनके दूर के लोगों के विरुद्ध पाप किया (2 शमूएल 13-18)। इस प्रकार राजा ने, ऊरिय्याह की पत्नी के साथ व्यभिचार के पाप को ढांपने के लिए एक बहुत भारी कीमत, दुःख और सताव के द्वारा तथा अपने एक बलशाली की का हत्या के द्वारा चुकाया (2 शमूएल 23:22, 39; 1 इतिहास 11:26, 41)।

बुद्धिमान ने एक बार ऐसा कहा, "विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है" (नीति. 13:15)। "विश्वासघातियों" के लिए इब्रानी शब्द בֹּגֵד *(बागद)* बहुवचन के रूप में प्रयोग किया गया है जो "सामान्य मानवीय संबंध में सामाजिक ज़िम्मेदारियों के अंतर्गत" प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "धोखाधड़ी करना" या "धोखा देना" है।[8] अब्राहम ने सारा के विषय, अबीमेलेक से झूठ इस पूर्वानुमान से बोला कि "इस स्थान पर लोगों में परमेश्वर का भय नहीं है" (20:11)। दूसरे शब्दों में, उसने सोचा कि सामान्य पति और पत्नी का रिश्ता अन्य जाति मनुष्य स्वीकार नहीं करेंगे।

लगभग चौबीस वर्षों से कुलपति कनान में रह रहा था और जहाँ तक हमें मालूम है कि दूसरे स्थानीय शासकों से उसको इस प्रकार की कोई समस्याएं नहीं हुई थी। सबसे अधिक व्याकुल करने की बात यह थी कि अब्राहम को पता चला कि इस अन्य जातिय राजा को विवाह के संबंध में उच्च नैतिकता का अहसास था। अबीमेलेक ने स्वीकारा कि उसने तो "अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से यह काम किया" और सारा को अपने रानीवास में रखा (20:5)। यह तो कुलपति था जिसने धोखे और विश्वासघाती से सारा के साथ अपने सच्चे रिश्ते के बारे में झूठ बोला।

अब्राहम का झूठ कई पीढ़ियों तक परमेश्वर के लोगों के लिए चेतावनी है; इसे शब्दों और कर्मों में तर्कसंगत बनाना आसान है। परमेश्वर के बच्चे अन्य जातियों से भी अधिक बोलने और कार्य करने की परीक्षा से अछूते नहीं हैं। जब पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखा तो उसने कुछ यहूदी भाइयों पर कड़े शब्दों में अभियोग लगाया: "क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों (अविश्वासियों) में परमेश्वर के नाम की निन्दा की जाती है" (रोमियों 2:24; देखें 2 पतरस 2:2)। यही अभियोग भविष्यवक्ताओं ने पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के प्रति लगाया (यशा. 52:5; यहेज. 36:20-23)। इसलिए पौलुस का उलाहना अभी भी प्रासंगिक हैः "इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।

झूठ बोलने से चरित्र बर्बाद होता है और यह किसी की गवाही को भी व्यर्थ ठहराता है। अब्राहम के लिए यह कहना कि सारा उसकी बहन है, को कुछ ही समय लगा होगा; उस झूठ को उन्होंने ऐसा बना लिया था कि जहाँ कहीं वे जाएं उसका वे उपयोग करेंगे (20:13), इसलिए उन्होंने इसका प्रयोग किया। झूठ उस बीज के समान था जो उन्होंने कई वर्षों पूर्व बोया था। जिसने उगकर उनके ही जीवन में कई कड़वे फल उत्पन्न किए। स्पष्ट रूप से इसको उन्होंने इसहाक के साथ बांटा क्योंकि इसी प्रकार का धोखा उसने भी अपने पत्नी रिबका के बारे में बोला जब वे पिलिश्तियों के गरार में भ्रमण कर रहे थे (26:6-11)। इस धरती पर हमारे जीवन में, भले या बुरे के लिए, दूसरे हमें प्रभावित करते हैं और हम उनको भी प्रभावित करते हैं।

अब्राहम और सारा का झूठ उन्हें बहुत महंगा पड़ा जिसने उनके पति और पत्नी के संबंध को प्रभावित किया। हाँ, इसने मिस्र और गरार के राजाओं, उनके घरानों और उनके राजकीय अधिकारियों के सम्मुख उनकी गवाही को नष्ट किया। इसके साथ ही, कुलपति के एक बड़े समूह के लोगों ने भी, जब उन्होंने यह सुना होगा कि उन्होंने क्या किया है, तो अपने स्वामी के प्रति सम्मान खोया होगा। अब्राहम और सारा ने एक सच्चे परमेश्वर के गवाही के साथ कुछ सीमा तक झूठ बोलने के कारण समझौता किया। सारांश यह है कि "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" के लोग के रूप में वे कौन है, का उन्होंने इनकार किया (17:1)।

यह तो पतरस का यीशु का इनकार के समान है जिसके साथ वह चला, रहा और जिस पर उसने अपने विश्वास और विश्वासयोग्यता का अंगीकार किया (मत्ती 16:16; 26:33-35, 69-75)। वस्तुतः, यह तो सभी शिष्यों के अनुभव के समतुल्य था। जब सिपाहियों ने यीशु को पकड़ा तो सभी शिष्यों ने अपने कार्यों, रात के अंधेरे में भागने के द्वारा, जैसे उसने पहले कहा था, के द्वारा उसका इनकार किया (मत्ती 26:31, 56)। जबकि प्रभु ने उन्हें पहले ही बताया था कि वे "जगत के नमक" और "जगत की ज्योति" हैं (मत्ती 5:13-15)। इसके बावजूद, कुछ समय के लिए, यीशु के पकड़ावाये जाने से पुनरुत्थान तक, उनका नमक "स्वाद रहित" हो गया था (मत्ती 5:13) और उनकी रोशनी अदृश्य हो गई थी। यह तो ऐसा जान पड़ा मानो उन्होंने अपनी रोशनी "टोकरी के नीचे" छिपा दी हो (मत्ती 5:15)। वे डरे और मोहभंग से हो गए थे (देखें लूका 24:21) जब वे रात के अंधेरे में भागे (मत्ती 26:56) और "यहूदियों के डर से" डरपोकों के समान अपने आपको दरवाज़ों के भीतर छिपा लिया था (यूहन्ना 20:19)। फिर, यीशु का मृतकों में से महिमामय पुनरुत्थान और शिष्यों पर अपने आपको प्रगट करने की घटना ने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया, उनके विश्वास को सचेत किया और उन्हें ऐसे साहस और आशा प्रदान की जो कभी भी संसार उनको नहीं दे सकता था और न ही यह उनके जीवन से हटा सकता था (यूहन्ना 20:19-31)।

वास्तव में अब्राहम को अपने बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य रहने में प्रभु के शिष्यों से अधिक समय लगा। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि वह सीधे मेसोपोटामिया के मूर्तिपूजकों में से निकल कर आया था और उसको जीने के लिए कनानियों के डराने वाले राजनीतिक संसार, धर्म इत्यादि से संघर्ष करना था। उसके लिए विश्वासियों का पिता होने के लिए, उसको एक प्रकार का शारीरिक पुनरुत्थान अर्थात आश्चर्यजनक रूप से निन्यानबे वर्ष की अवस्था में और सारा का नवासी वर्ष की अवस्था में, इसहाक, प्रतिज्ञा का बच्चा को पैदा करने के लिए उनके शरीर का जीर्णोधार हुआ (देखें उत्पत्ति 21)।

इसके बावजूद, फिर परमेश्वर ने अब्राहम का विश्वास के लिए संघर्ष और उसका कई वर्षों तक झूठ बोलना और धोखा देना क्यों सहा? चाहे कोई भी इस प्रश्न का कैसे उत्तर दे, दूसरा प्रश्न यहाँ स्वतः उठ जाता है। क्यों परमेश्वर हमारे विश्वास के संघर्ष और हमारी कमज़ोरियों में, जो कभी कभी हमसे पाप भी कराती है, सहता है? परमेश्वर का उसके सारे लोगों के लिए उद्देश्य यह है कि जैसे उसने अब्राहम के साथ किया, वैसे ही वह न केवल आत्माओं का उद्धार करना है और न ही लोगों को स्वर्गीय आवास में ले जाना है बल्कि उनके अंदर चरित्र निर्माण कर मसीह के स्वरूप में उनको परिवर्तित करना है (2 कुर्रि. 3:18)। परमेश्वर हमें अपने साथ, मसीह के साथ और एक दूसरे के साथ अनंतकाल की संगति करने के लिए तैयार करना चाहता है।

आदम और हव्वा वर्जित फल खाने के बाद भी अदन की वाटिका में थे लेकिन उनकी संगति उनके सृष्टिकर्ता के साथ और एक दूसरे के साथ तुरंत टूटने

लगी थी। वे परमेश्वर से डरे हुए थे और झाड़ियों में उससे छिपने का प्रयास कर रहे थे। आदम ने अपने पाप के लिए हव्वा और परमेश्वर को ज़िम्मेदार ठहराया, जबकि हव्वा ने इसके लिए सर्प को ज़िम्मेदार ठहराया। जबकि प्रथम जोड़े धरती के स्वर्गलोक में थे, तब भी उन्होंने आनंद, शांति और एक दूसरे के संगति या परमेश्वर के साथ संगति की सुरक्षा का अनुभव नहीं उठाया। इसके बजाय वे दोषी, डरपोक और दुःखी लोग बन गए।

पाप मनुष्य को अपने सृष्टिकर्ता से अलग करता है और उनमें परमेश्वर के स्वरूप को नाश करता है। परमेश्वर असिद्ध मनुष्य को क्यों सहता है? क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:16)। अपने अनुग्रह के द्वारा उसने इस्राएलियों को उनके पापों में सहा। वह उन्हें एक पवित्र लोगों के रूप में ढालना और बनाना चाहता है ताकि वे उसके प्रकृति और चरित्र को संसार में प्रदर्शित कर सके (18:18, 19; निर्गमन 19:4-6)। इसलिए, परमेश्वर के अनुग्रह से, वह मसीहियों के साथ आज भी ऐसा ही करता है। हमारे पाप और कमजोरियों के बावजूद, हम अब्राहम के आत्मिक संतान है और "प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस" भी हैं (गला. 3:29)। प्रभु हमारे लिए धीरज धरता है, हमें क्षमा करता है और आशीष देता है, जैसे कि उसने अब्राहम के साथ किया - यह हमारे सिद्ध विश्वास या संपूर्ण आज्ञाकारिता के कारण नहीं है बल्कि वह हमें मसीह में, उसके सिद्ध धार्मिकता की वस्त्र पहने हुए देखता है (2 कुरिं. 5:21; गला. 3:26, 27)।

समाप्ति नोट्स

[1]एलिएजर डी. ओरेन, "गेरार," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी*, एडिटर डैविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992), 2:989-91. [2]भजन 34 की अभिलेख, गत का पलिस्तीनी राजा "अबीमेलेक" (एक वंश की उपाधि) की ओर इंगित करता है, जबकि 1 शमूएल 21:10-15 एक व्यक्तिगत नाम "आकीश" करके संबोधित करता है। [3]2 इतिहास 35:22 का लेखक यह कहता है कि अच्छे राजा योशियाह की मृत्यु इसलिए हुई क्योंकि उसने "परमेश्वर के मुख से उसने नको के द्वारा वचन नहीं सुना।" [4]अबीमेलेक ने प्रभु (אֲדֹנָי, *अडोनाई)* शब्द का प्रयोग किया है जबकि 21:22, 23 में उसने परमेश्वर (אֱלֹהִים, *एलोहिम)* ने बोला प्रयोग किया है। किसी भी परिस्थिति में उसने परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम (יהוה, *YHWH*), यहोवा, का प्रयोग नहीं किया है। [5]ऐलेन एडलर गुडफ्रेंड, "अडल्ट्री," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी*, 1:82. मूसा के व्यवस्था के अनुसार, व्यभिचार का पाप मृत्युदण्ड के समान था (लैव्य. 20:10; व्यव. 22:22)। [6]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 275-76. [7]NIV ने इस माप को शेकेल शब्द जोड़कर स्पष्ट किया है। इस समय "शेकेल" एक वजन था न कि नक्कासी की गई एक सिक्का। [8]लुईस गोल्डबर्ग, "בָּגַד," *TWOT* में, 1:89-90.